मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 15

अनुक्रमांक

नाम

102/1 304(SP)

2016

सामान्य हिन्दी

प्रथम प्रश्नपत्र

समय : तीन घण्टे 15 मिनट] [पूर्णांक : 50

निर्देश : प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं ।

1. क) 'मुद्राराक्षस' नाटक के रचनाकार हैं

i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

ii) मोहन राकेश

iii) धर्मवीर भारती

iv) राहुल सांकृत्यायन । 1

[Turn over

951285

ख) सरदार पूर्णसिंह द्वारा लिखित निबन्ध नहीं है

i) सच्ची वीरता

ii) कन्यादान

iii) पवित्रता

iv) कालिदास की निरंकुशता । 1

ग) गद्य-विधा की दृष्टि से 'वोल्गा से गंगा' है

i) उपन्यास

ii) कहानी

iii) आत्मकथा

iv) संस्मरण । 1

घ) 'ज्ञानोदय' पत्रिका के सम्पादक थे

i) डॉ० सम्पूर्णानन्द

ii) पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी

iii) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

iv) रामवृक्ष बेनीपुरी । 1

ङ) गद्य विधा की संख्या है

i) तीन

ii) सात

iii) ग्यारह

iv) पन्द्रह । 1

2. क) 'रामभक्ति शाखा' के कवि नहीं हैं

i) तुलसीदास

ii) अग्रदास

iii) नन्ददास

iv) नाभादास । 1

ख) 'गंगावतरण' काव्यकृति के रचयिता हैं

i) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

ii) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

iii) सुमित्रानन्दन पन्त

iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र । 1

ग) तार सप्तक का सम्पादन वर्ष है

i) सन् 1943

ii) सन् 1951

iii) सन् 1955

iv) सन् 1959. 1

घ) रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना नहीं है

i) रश्मिरथी

ii) चक्रवाल

iii) परशुराम की प्रतीक्षा

iv) सुनहले शैवाल । 1

ङ) 'अज्ञेय' को 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ

i) 'कितनी नावों में कितनी बार' पर

ii) 'अरी ओ करुणा प्रभामय' पर

iii) 'आँगन के पार द्वार' पर

iv) 'ऐसा कोई घर आपने देखा है' पर । 1

3. (क) निम्नलिखित अवतरणों में से किसी **एक** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2 + 5 = 7

i) सूर्यदेव की उदारता और न्यायशीलता तारीफ के लायक है । तरफदारी तो उसे छू-तक नहीं गयी – पक्षपात की तो गंध तक उसमें नहीं, देखिए न, उदय तो उसका उदयाचल पर हुआ, पर क्षण ही भर में उसने अपने नये किरण-कलाप को उसी पर्वत-शिखर पर नहीं, प्रत्युत सभी पर्वतों के शिखरों पर फैलाकर उन सब की शोभा बढ़ा दी । उसकी इस उदारता के कारण इस समय ऐसा मालूम हो रहा है, जैसे सभी भूधरों ने अपने शिखरों – अपने मस्तकों – पर दुपहरिया के लाल-लाल फूलों के मुकुट धारण कर लिए हों । सच है, उदारशील सज्जन अपने चारु चरितों से अपने ही उदय-देश को नहीं, अन्य देशों को भी आप्यायित करते हैं ।

ii) रमणीयता और नित्य नूतनता अन्योन्याश्रित हैं, रमणीयता के अभाव में कोई भी चीज मान्य नहीं होती । नित्य नूतनता किसी भी सर्जक की मौलिक उपलब्धि की प्रामाणिकता सूचित करती है और उसकी अनुपस्थिति में कोई भी चीज वस्तुतः जनता व समाज के द्वारा स्वीकार्य नहीं होती । सड़ी-गली मान्यताओं से जकड़ा हुआ समाज जैसे आगे बढ़ नहीं पाता, वैसे ही पुरानी रीतियों और शैलियों की परम्परागत लीक पर चलनेवाली भाषा भी जनचेतना को गति देने में प्रायः असमर्थ ही रह जाती है । भाषा समूची युग-चेतना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है और ऐसी सशक्तता तभी वह अर्जित कर सकती है जब वह अपने युगानुकूल सही मुहावरे को

ग्रहण कर सके । भाषा सामाजिक भाव-प्रकटीकरण की सुबोधता के लिए ही उद्दिष्ट है, उसके अतिरिक्त उसकी जरूरत ही सोची नहीं जाती । इस उपयोगिता की सार्थकता समसामयिक सामाजिक चेतना में प्राप्त (द्रष्टव्य) अनेक प्रकारों की संश्लिष्टताओं की दुरूहता का परिहार करने में ही निहित है ।

(ख) निम्नलिखित में से किसी **एक** सूक्ति की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : 1 + 2 = 3

i) 'आचरण का विकास जीवन का परमोद्देश्य है ।'

ii) 'भूल करना बुरा नहीं है, भूल को भूल न समझना ही बड़ा दुर्भाग्य है ।'

iii) 'पण्डिताई भी एक बोझ है — जितनी भी भारी होती है, उतनी ही तेजी से डुबाती है ।'

(ग) निम्नलिखित अवतरणों में से किसी **एक** को संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : 2 + 5 = 7

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं ।
हंस-सुता की सुन्दर कगरी, अरु कुञ्जनि की छाँहीं ।
वे सुरभी वे बच्छ दोहिनी, खरिक दुहावन जाहीं ।
ग्वाल-बाल मिलि करत कुलाहल, नाचत गहि-गहि बाहीं ।
यह मथुरा कंचन की नगरी, मनि-मुक्ताहल जाहीं ।
जबहिं सुरति आवति वा सुख की, जिय उमगत तन नाहीं ।
अनगन भाँति करी बहु लीला, जसुदा नंद निबाहीं ।
सुरदास प्रभु रहे मौन ह्वै, यह कहि-कहि पछिताहीं ।।

ii) नील परिधान बीच सुकुमार

खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,

खिला हो ज्यों बिजली का फूल

मेघ-वन बीच गुलाबी रंग ।

ओह ! वह मुख ! पश्चिम के व्योम-

बीच जब घिरते हों घन श्याम;

अरुण रवि-मंडल उनको भेद

दिखाई देता हो छविधाम !

(ख) निम्नलिखित सूक्तियों में से किसी **एक** की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : 1 + 2 = 3

i) 'नाक बास बेसरि लह्यौ बसि मुकतनु कैं संग ।'

ii) 'माता न कुमाता पुत्र कुपुत्र भले ही ।'

iii) 'चार दिन सुखद चाँदनी रात और फिर अन्धकार अज्ञात ।'

[Turn over

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए : 3 + 1 = 4

i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

ii) वासुदेवशरण अग्रवाल

iii) मोहन राकेश ।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए : 2 + 2 = 4

i) गोस्वामी तुलसीदास

ii) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

iii) रामधारी सिंह 'दिनकर' ।

7\. क) 'बलिदान' **अथवा** 'पंचलाइट' कहानी का सारांश लिखिए । 4

अथवा

'प्रायश्चित' **अथवा** 'लाटी' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ।

ख) स्वपठित नाटक के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी **एक** का उत्तर दीजिए : 4

i) 'राजमुकट' नाटक के पहले अंक की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए ।

अथवा

'राजमुकुट' नाटक के आधार पर मेवाड़ के महाराणा 'प्रतापसिंह' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

ii) 'कुहासा और किरण' नाटक के आधार पर 'सुनन्दा' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'कुहासा और किरण' नाटक के तीसरे अंक की कथावस्तु लिखिए ।

iii) 'सूतपुत्र' नाटक के आधार पर 'कर्ण' का चरित्रांकन कीजिए ।

अथवा

'सूतपुत्र' नाटक के 'द्वितीय अंक' के कथानक अपने शब्दों में लिखिए ।

iv) 'आन का मान' नाटक के आधार पर 'औरंगजेब' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

अथवा

'आन का मान' नाटक के 'तृतीय अंक' की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

v) 'गरुडध्वज' नाटक के आधार पर 'काशिराज' की चारित्रिक विशेषताएँ उद्घाटित कीजिए ।

अथवा

'गरुडध्वज' नाटक के 'पहले अंक' की कथा अपने शब्दों में लिखिए ।

8. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 4

i) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के 'पंचम सर्ग' की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'कुन्ती' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

ii) 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए ।

अथवा

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर 'गाँधीजी' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए ।

iii) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर 'दु:शासन' का चरित्रांकन कीजिए ।

अथवा

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए ।

iv) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'राज्यश्री' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

अथवा

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए ।

v) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर 'गाँधीजी' की चरित्रगत विशेषताएँ लिखिए ।

अथवा

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के 'तृतीय सर्ग' की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए ।

vi) 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए ।

अथवा

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के तीसरे सर्ग 'आखेट' की कथावस्तु का उद्घाटन कीजिए ।